पंजीयन क्रमांक - 12/2541 SET-B आदर्श उत्तर

परीक्षा का नाम- उत्तरमध्यमा , खण्ड-द्वितीय

विषय - समाजशास्त्र (1213)

कुल प्रश्न - 27
समय - 3 घण्टे

कुल पृष्ठ - 14
पूर्णांक - 100 अंक

प्र-1- सही विकल्प का चयन कर लिखिए - (1×8=8)

(i) (स) उत्तर प्रदेश
(ii) (ब) चार
(iii) (स) बाजार आर्थिक और सामाजिक संस्था है
(iv) (ब) 1955 में
(v) (अ) अनेकता में एकता
(vi) (द) साम्राज्यवाद
(vii) (ब) आधुनिकीकरण
(viii) (द) पंचायती राज्य व्यवस्था से

प्र-2- रिक्त स्थानों में उचित शब्द लिख पूर्ति कीजिए- (1×8=8)

(i) 1951
(ii) 1991
(iii) वैश्विक
(iv) टेलीविजन
(v) नील
(vi) जनांकिकी
(vii) मध्य प्रदेश
(viii) जीविकोपार्जन

प्र-3- सही जोड़ी मिलान कर लिखिए- (1×8=8)

(i) (e) सन् 1955

(ii) (d) सामुदायिकता की भावना

(iii) (f) सन् 1818

(iv) (a) राजा राम मोहन राय

(v) (g) गैर-राजनीतिक संगठन

(vi) (c) किराये पर जमीन देना

(vii) (h) विकसित बाजार प्रणाली

(viii) (b) भाररहित जानात्मक अर्थव्यवस्था

प्र-4- एक शब्द/वाक्य में उत्तर लिखिए- (1×8=8)

(i) जवाहर लाल नेहरू

(ii) कोलकाता और चेन्नई में

(iii) मेधा पाटकर

(iv) मातृसत्तात्मक एवं पितृसत्तात्मक

(v) क्षेत्रवाद

(vi) नगरीकरण

(vii) 1939

(viii) एम. एन. श्रीनिवास

प्र. 5- सत्य/असत्य छांटकर लिखिए- (1×8=8)

(i) असत्य

(ii) सत्य

(iii) सत्य

(iv) असत्य

(v) सत्य

(vi) सत्य

(vii) असत्य

(viii) असत्य

प्र-6— प्रतिस्थापन-स्तर वह होता है, जब जन्म-दर और मृत्यु दर के बीच बहुत कम अन्तर रह जाने से जनसंख्या स्थिर हो जाती है। (2)

अथवा

किसी समाज की कुल जनसंख्या के विभिन्न आयु वर्गों में व्यक्तियों का अनुपात आयु संरचना कहलाती है।

प्र-7— जाति एक प्राचीन संस्था है, जोकि हजारों वर्षों से भारतीय इतिहास एवं संस्कृति का एक हिस्सा है। जाति शब्द की उत्पत्ति पुर्तगाली मूल के शब्द कास्टा से हुई है जिसका अर्थ है विशुद्ध नस्ल। (2)

अथवा

जनजाति समुदाय का अर्थ एक ऐसे जन समुदाय से है जो एक साथ मिलकर आजीविका की खोज में इधर-उधर घूमता है। इस प्रकार के जन समुदाय को हम वन्य-जाति, आदिवासी या जनजाति आदि नामों से पुकारते हैं।

प्र-8— साप्ताहिक बाजार सप्ताह के किसी विशिष्ट दिन आयोजित किए जाते हैं। उनके पास स्थाई दुकान नहीं होती। व्यापारी दिन के लिए दुकानों की स्थापना करते हैं और फिर उन्हे शाम तक बन्द कर देते हैं। (2)

अथवा

जजमानी प्रथा भारत के ग्रामीण समुदाय के अन्तर्गत विभिन्न जातियों के परिवारों के बीच एक सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था है, जिनके अनुसार एक परिवार दूसरे को सम्पूर्ण रूप से कुछ नियत सेवाएँ देता है।

प्र-9- 'अस्पृश्यता' जिसे आम बोलचाल में छुआछूत कहा जाता है, जिसके अन्तर्गत निचली जातियों के लोगों को कर्मकाण्ड की दृष्टि से अशुद्ध माना जाता है। (2)

अथवा

एक समूह के सदस्यों द्वारा दूसरे समूह के बारे में जो पूर्वकल्पित विचार या व्यवहार होता है उसे पूर्वाग्रह कहते हैं।

(2)

प्र-10- सामान्य भाषा में अल्पसंख्यक वे लोग कहलाते हैं जो धर्म व भाषा की दृष्टि से संख्या में कम हैं।

अथवा

पंथनिरपेक्षता से आशय ऐसे राज्य से है जो किसी विशेष धर्म का अन्य धर्मों की तुलना में पक्ष नहीं लेता है, राज्य के लिए सभी धर्म समभाव होते हैं।

प्र-11- संरचनात्मक परिवर्तन से समाज की संरचना में ही परिवर्तन आ जाता है अर्थात जब समाज में चल रही संस्थाओं अथवा नियमों में परिवर्तन आना शुरू हो जाए तो उसे संरचनात्मक परिवर्तन कहते हैं। (2)

अथवा

सामाजिक संरचना का तात्पर्य उस व्यवस्था से होता है जिसमें उस व्यवस्था व संरचना के विभिन्न तत्व एक-दूसरे से व्यवस्थित जुड़े होते हैं।

प्र-12- प्रार्थना समाज का उद्देश्य जातिगत भेदभावों को (2)
दूर करना तथा सामाजिक समानता के सिद्धान्त को महत्व देते हुए समाज में फैली कुरीतियों, बाहरी आडम्बरों, जातिगत भेदभावों तथा स्त्रियों के शोषण के विरुद्ध कार्य करना था।

अथवा

आर्य समाज की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य पाश्चात्य प्रभावों की प्रतिक्रियास्वरूप हिन्दू धर्म में सुधार करना था।

प्र.13- राजनीतिक दल के दो कार्य निम्न हैं- (2)

(i) चुनावों का संचालन
(ii) नीतियों और कार्यक्रमों के प्रति जागरूक करना।
(iii) कानून निर्माण में सहायक
(iv) जनता तथा शासन के मध्य संबंध
(v) सरकार बनाना

(नोट- कोई भी दो कार्य के विवरण लिखने पर पूर्ण अंक।)

अथवा

दबाव समूह के दो प्रकार्य निम्न हैं-

(i) दबाव समूह अपने हितों को लेकर सरकार पर दबाव डालता है वे अधिक स्पष्ट होने के साथ किसी न किसी रूप में कल्याण से जुड़े होते हैं।

(ii) यह निर्वाचन प्रक्रिया में भाग नहीं लेते लेकिन निर्वाचन में इनके द्वारा ऐसे प्रत्याशी को समर्थन दिया जाता है जो इनकी मांगो से सहमत होते हैं।

(6)

प्र-14- भूमि सुधार एक ऐसा एकीकृत कार्यक्रम है जो कृषि संरचना के दोषों से उत्पन्न आर्थिक तथा सामाजिक विकास के अवरोधों को समाप्त करने के लिए बनाया गया है। (2)

अथवा

विनिवेश से आशय किसी देश की सरकार, ~~किसी~~ द्वारा सार्वजनिक उपक्रमों में सरकारी हिस्सेदारी बेचने की प्रक्रिया से है।

प्र-15- मिश्रित अर्थव्यवस्था एक ऐसी अर्थव्यवस्था है जो अलग-अलग बाजार एवं आर्थिक योजनाओं का मिश्रण है जिसमें निजी क्षेत्र और राज्य अर्थव्यवस्था का मिश्रण होता है। (2)

अथवा

जिन विकसित देशों में विभिन्न वस्तुएँ या सेवाएँ मँहगी हैं, उनमें कम्प्यूटर नेटवर्क के द्वारा बहुत-सी सेवाएँ उन देशों से ली जाने लगी हैं, जहाँ उन्हें कम मूल्य पर प्राप्त किया जा सकता है। ऐसी सेवाएँ देने वाले व्यापारिक केन्द्र को ही कॉल सेण्टर कहा जाता है।

प्र-16- वह आन्दोलन जो प्रचलित पुरानी व्यवस्था को उखाड़ कर उसकी जगह नई व्यवस्था को लागू करता है वही क्रान्तिकारी आन्दोलन कहलाता है। (2)

अथवा

चिपको आन्दोलन एक पर्यावरण रक्षा का आन्दोलन है। यह भारत के उत्तराखण्ड राज्य में किसानों ने वृक्षों की कटाई का विरोध करने के लिए किया था। वृक्षों की रक्षा के लिए किसान वृक्षों से चिपक गये थे इसलिये इसे चिपको आन्दोलन कहा जाता है।

प्र-17— हममें से हर कोई परिवार में उत्पन्न हुआ है और हममें से सभी लोग परिवार में अनेक वर्ष बिताते हैं। कभी² हम अपने परिवार नातेदार से लगाव महसूस करते हैं जबकि दूसरों के बारे में हम ऐसा महसूस नहीं करते। एक ओर तो हम उनके हस्तक्षेप के लिए अप्रसन्नता या रोष प्रकट करते हैं, फिर भी जब भी हम उनसे दूर रहते हैं तो उनके रौबदारपूर्ण तरीकों के लिए तरसते हैं और याद करते हैं। इन्हीं भावनाओं के आधार पर परिवार सामाजिक संरचना की धुरी है। (3)

अथवा

संयुक्त परिवार की विशेषताएँ निम्न हैं—

(i) बड़ा आकार

(ii) कर्ता की प्रधानता

(iii) सामान्य निवास

(iv) सहयोग और आपसी प्रेम

(नोट — उपर्युक्त बिन्दु पर किन्हीं तीन का विस्तार से लिखने पर पूर्ण अंक प्रदाय होंगे।)

प्र. 18— पूँजीवाद एक आर्थिक व्यवस्था है, जिसमें निजी सम्पत्ति की बहुत महत्ता होती है। पूँजी के निजी स्वामित्व, उत्पादन के साधनों पर व्यक्तिगत नियन्त्रण, स्वतन्त्र औद्योगिक प्रतियोगिता और उपभोक्ता द्रव्यों के अनियन्त्रित वितरण की व्यवस्था होती है। पूँजीवाद में उत्पादन बड़े स्तर पर होता है। पूँजीपति अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने की कोशिश करता है और इसी कारण वह निवेश करता है। पूँजीवाद का सबसे बड़ा लक्षण इसके मजदूरों का शोषण होता है। (3)

अथवा

भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में एक देश दूसरे पर परस्पर निर्भर हो जाते हैं और लोगों के बीच दूरियाँ घट जाती है। इसमें अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर वस्तुओं, पूँजी, समाचार और लोगों का संचयन, प्रोद्योगिकी, कम्प्यूटर, दूरसंचार, परिवहन और अन्य आधारभूत सुविधाएँ आदि हैं जिनसे विश्व के किसी कोने में परिवर्तन आता है तो उसका प्रभाव पूरे विश्व पर पड़ता है।

प्र- 19 — राष्ट्र एक अनूठे किस्म का समुदाय होता है, जिसका वर्णन तो आसान है पर इसे परिभाषित करना कठिन है। ऐसे अनेक विशिष्ट राष्ट्र हैं जिनकी स्थापना साझे धर्म, भाषा, नृजातीयता, इतिहास अथवा क्षेत्रीय संस्कृति जैसी साझी सांस्कृतिक संस्थाओं के आधार पर की गई है। किन्तु किसी राष्ट्र के परिभाषिक लक्षणों का निर्धारित करना कठिन है। राष्ट्र समुदायों का समुदाय है। एक राजनीतिक समूहवाद के अन्तर्गत किसी देश में नागरिक अपनी आवश्यकताओं का सहभाजन करते हैं। (3)

अथवा

सांस्कृतिक विविधता का अर्थ है- देश में अलग-अलग धर्मों, समुदायों, प्रजातियों, संस्कृतियों, परम्पराओं, रीति-रिवाजों का मौजूद होना। परन्तु सांस्कृतिक विविधता के कारण देश में बहुत-सी समस्याएँ भी उत्पन्न होने की आशंका होती है। नागरिक अपने देश के साथ अपनत्व रखने के साथ-साथ अपने नृजातीय, धार्मिक, भाषाई अथवा अन्य किसी प्रकार के समुदाय के साथ भी गहरा सम्बन्ध रखते हैं जिससे देश में जातिवाद, भाषावाद, क्षेत्रवाद

साम्प्रदायिकता आदि दंगे फैलने का डर रहता है। इससे देश में समायोजन करना कठिन हो जाता है। यही कारण है कि राज्य अक्सर सांस्कृतिक विविधता के बारे में शंकालु होते हैं।

प्र-20— भारत में पंचायती राज व्यवस्था का ढाँचा— (4)

(i) प्रत्येक जिले के लिए जनपद पंचायत
(ii) प्रत्येक विकासखण्ड के लिए जनपद पंचायत
(iii) ग्रामो के लिए ग्राम सभा और ग्राम पंचायत
इस प्रकार पंचायतों के तीन स्तर हैं—
(i) जिला पंचायत (ii) जनपद पंचायत (iii) ग्राम पंचायत

पंचायतों के अधिकार एवं कार्य—

(i) ग्रामीण क्षेत्रों में लघु सिंचाई योजनाओं, पीने के पानी तथा तालाबों और पोखरों से सम्बन्धित व्यवस्था करना। पशुपालन, मछली पालन, कुक्कुट पालन और दुग्ध उद्योग का विकास करना।
(ii) खेती के विकास, भूमि सुधार और चारागाहों के विकास से सम्बन्धित कार्य करना।
(iii) सड़कों और सार्वजनिक भूमि के किनारे वृक्षारोपण करना तथा रेशम के उत्पादन को बढ़ाना। कुटीर उद्योगों, कृषि उद्योगों और लघु उद्योगों के विकास में सहायता करना।

अथवा

ग्राम पंचायत को राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त टैक्स लगाने का अधिकार प्राप्त है। इसे सम्पत्ति कर, पशु कर, पेशा कर, मार्ग कर चुंगी कर इत्यादि से आय प्राप्त होती है। पंचायतों को प्रत्येक वर्ष सरकार से अनुदान प्राप्त होते हैं जिससे उसकी आय बढ़ती है। पंचायत को मेलों से आय, पंचायत की सम्पत्ति, कूड़ा-करकट, गोबर बेचने से आय प्राप्त होती है।

प्र-2̶1̶ संचार क्रान्ति के चलते पिछले तीस वर्षों में दुनिया तेजी से करीब आई है और जितने परिवर्तन हुए उन सबके पीछे मीडिया का विश्व स्तर पर प्रसार है। देश के करीब हर राज्य में, ग्रामीण इलाकों में अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं ने अपनी पहुँच बना ली है। टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट, मोबाइल फोन और संचार के कई साधन हमारे गाँवो की ओर बढ़ रहे हैं। इन सारी प्रक्रियाओं में मीडिया और भूमण्डलीकरण आपस में संबंधित है। (3)

अथवा

जनसम्पर्क एक ऐसा संगठन है जो देश के बिभिन्न भागों में रहने वाले लाखों लोगों तक पहुँचने की क्षमता रखता है। आजकल जनसम्पर्क हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण कारक बन चुका है।

(i) यह हमारे जीवन का अटूट हिस्सा है।

(ii) यह हमेशा वास्तविकता तथा विश्व में घट रही घटनाओं पर अपनी पैनी नजर रखता है।

(iii) जनसम्पर्क के अन्तर्गत दूरसंचार के माध्यम से जुड़ी मोबाइल सेवाएँ तथा विज्ञापन भी शामिल है।

प्र-21 (2̶0̶) हरित क्रान्ति का अभियान कृषि व्यवस्था में क्रान्तिकारी नीतियों द्वारा सर्वांगीण विकास से होता है और इसका अन्तिम लक्ष्य कृषि फसलों का अधिकतम उत्पादन लेना होता है। हरित क्रान्ति कृषि व्यवस्था में अधिकाधिक अच्छा और अधिक अन्न उपजाने का एक सम्पूर्ण व कारगर आन्दोलन है। (3)

अथवा

भारत में भूमि सुधार के तीन महत्वपूर्ण उद्देश्य निम्न हैं-

(i) जमींदारी व्यवस्था का उन्मूलन

(ii) पट्टेदारी को समाप्त करना

(iii) काश्तकारी सुधार

(iv) जोतों की चकबन्दी

(नोट:- इन उद्देश्यों में से किन्हीं तीन पर विस्तार से लिखने पर पूर्ण अंक).

प्र.- 23 — स्त्री-पुरुष अनुपात जनसंख्या में लैंगिक सन्तुलन का महत्वपूर्ण सूचक है। विगत शताब्दी में भारत में स्त्री-पुरुष अनुपात में लगातार गिरावट हो रही है। भारत में स्त्री-पुरुष अनुपात में गिरावट आने के कई कारण हैं- जैसे — शैशवावस्था में बच्चियों की देखभाल की घोर उपेक्षा, लिंग विशेष का गर्भपात, बालिका शिशु की हत्या, गर्भस्थ शिशु का परीक्षण, बालिका भ्रूण को गर्भ में ही नष्ट कर देना। उपर्युक्त कारणों से स्त्री-पुरुष अनुपात लगातार गिर रहा है। (4)

<u>अथवा</u>

जनसांख्यिकीय संक्रमण का सिद्धांत से तात्पर्य यह है कि जनसंख्या वृद्धि आर्थिक विकास के समग्र स्तरों से जुड़ी होती है एवं प्रत्येक समाज विकास से संबंधित जनसंख्या वृद्धि के एक निश्चित स्वरूप का अनुसरण करता है। जनसंख्या वृद्धि के तीन बुनियादी चरण होते हैं पहला चरण है समाज में जनसंख्या वृद्धि का कम होना क्योंकि समाज अल्पविकसित और तकनीकि दृष्टि से पिछड़ा होता है। वृद्धि दरें इसलिए कम होती हैं क्योंकि मृत्यु दर और जन्म दर दोनों ही बहुत ऊँची होती है। इसलिये दोनो के बीच का अन्तर नीचा रहता है। तीसरे चरण में भी विकसित समाज में जनसंख्या वृद्धि दर नीची रहती है क्योंकि ऐसे समाज में मृत्यु और जन्म दर में कम अन्तर रहता है। दोनों चरणों के बीच एक अवस्था तीसरी संक्रमणकालीन चरण होता है जब समाज पिछड़ी अवस्था से उन्नत अवस्था में जाता है और इस अवस्था की विशेषता यह है कि इस दौरान जनसंख्या वृद्धि की दरें बहुत ऊँची हो जाती है।

प्र-24- भारतीय समाज पुरुष प्रधान समाज है, स्त्रियाँ पुरुषों के अधीन रहती हैं। औरतों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता है। समाज में आए दिन बलात्कार, दहेज प्रथा एवं लिंग अनुपात सम्बन्धित अपराध, पत्नी का शारीरिक उत्पीड़न, कन्या भ्रूण हत्या जैसी हिंसक घटनाएँ होती हैं। औरतों को पुरुषों पर आर्थिक रूप से निर्भर रहना पड़ता है। शिक्षा का अभाव होने के कारण उन्हें अपने अधिकारों का ज्ञान नहीं होता है। अज्ञानता के कारण अनेक अंधविश्वासों, कुरीतियों के बीच जकड़ी रहती हैं। स्त्रियों को चारदीवारी के अन्दर रखकर पति को परमेश्वर मानने का उपदेश उसे बचपन से ही पढ़ाया जाता है। (4)

अथवा

अक्षम लोग इसलिये 'अक्षम' नहीं होते कि वे शारीरिक या मानसिक रूप से बाधित होते हैं, बल्कि इसलिए भी अक्षम होते हैं कि समाज उनकी जरूरतों को पूरा नहीं करता। इसकथन को निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट किया जा सकता है-

(i) अक्षमता एक जैविक कमजोरी मानी जाती है।

(ii) अक्षम व्यक्ति को हमेशा शिकार यानी पीड़ित व्यक्ति के रूप में देखा जाता है।

(iii) यह माना जाता है कि निर्योग्यता उस निर्योग्य व्यक्ति के अपने प्रत्यक्ष ज्ञान से जुड़ी है।

(नोट:- निर्योग्य/अक्षम व्यक्ति से संबंधित सामाजिक भेदभाव के बिन्दु भी शामिल हैं।)

प्र-25- औद्योगीकरण का समाज पर प्रभाव- (4)

(i) औद्योगीकरण का सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव

(ii) श्रम विभाजन का विस्तार

(iii) औद्योगीकरण का आपसी सम्बन्धों एवं समानता पर असर

(नोट:- बिन्दुओं पर विवरण लिखने पर पूर्ण अंक)

अथवा

सन् 1990 के दशक में सरकार ने उदारीकरण की नीति को अपनाया है-

(i) उदारीकरण की नीतियों से उद्योगों को लाइसेंस से मुक्त कर दिया है।

(ii) भारतीय दुकानों पर विदेशी वस्तुएँ आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं।

(iii) सरकार सार्वजनिक ~~काम~~ कम्पनियों के अपने हिस्सों को निजी क्षेत्र की कम्पनियों को बेचने का प्रयास कर रही है।

उदारीकरण के लाभ:-

(i) रोजगार के अवसर में व्यापक वृद्धि।

(ii) सरकारी कम्पनियों के निजीकरण से कुशलता बढ़ती है।

प्र- 26- भूमण्डलीकृत अर्थव्यवस्था के विशिष्ट लक्षण- (4)

(i) वैश्वीकरण औद्योगिक संगठनों के विकसित स्वरूप को जन्म देता है।

(ii) इसमें विश्व स्तर पर व्यापारिक बाधाओं को न्यूनतम करने के प्रयत्न किये जाते हैं।

(iii) विकसित राष्ट्र, अपने विशाल कोषों को ब्याज दर के लाभ विकासशील राष्ट्रों में विनियोजित करना अधिक पसन्द करते हैं।

(iv) भूमण्डलीकरण अर्थव्यवस्था से अलग-अलग देशों के बीच आदान-प्रदान बढ़ता है जिससे विश्व शान्ति बढ़ती है।

अथवा

भूमण्डलीकरण के कारण उपभोक्ताओं के लिए उपभोग के नए विकल्पों में वृद्धि हुई है। हम अपने घरों में परिवार या मित्रों के साथ जो बैठकर खाते-पीते हैं, वह भी धीरे-धीरे बदल रहा है। फलों की दुकान पर चीन की नाशपाती और ऑस्ट्रेलिया के सेब खरीदकर खाने में हमें संकोच नहीं होता। इस तरह भूमण्डलीकरण उपभोक्ताओं पर प्रभाव डाल रहा है।

प्र- 27- सामाजिक आंदोलन के प्रकार- (4)

(i) प्रतिदानात्मक आन्दोलन
(ii) सुधारवादी आंदोलन
(iii) क्रान्तिकारी आन्दोलन

(नोट:- विस्तार से लिखने पर अंक)

अथवा

सामाजिक आन्दोलन की विशेषताएँ-

(i) सामाजिक लक्ष्य
(ii) सामाजिक परिवर्तन
(iii) विरोध प्रवृत्ति
(iv) संगठन
(v) प्रासंगिक
(vi) भौगोलिक क्षेत्र
(vii) गतिशीलता
(viii) नेता की भूमिका

(नोट- किन्हीं चार बिन्दुओं पर विस्तार से लिखने पर अंक)